

कर संपेदित देवा सदैव विबुधैः गन भूषितः ॥ अन्तर प्रासिद्धः कदैः स आयेथः ॥ रुधुषतः ॥ प्रेम सूर
रुवेधुनः ॥ १ ॥ आदि अथ उपमा मेऽधिक पद दोष लसेर साधर सुता सो संभु भूति सिन अंग सरद जल
द ज्यो वीज सौलि पेरे द्रधनु संगे ॥ चतुर्थ चरन अधिक पद कोई कोई उपमान नदी रसाना मभूमि
कोर साधर पर्वत हमारो कियो कर्ना भरन भूमि ॥ भर रु अचला संजानि ॥ रु अने ताथ धरनी पर
सा ॥ ६ ॥ धरित्री ॥ ७ ॥ थरा ॥ फेरि कहि ॥ ८ ॥ सुवानी कोनी ॥ ९ ॥ अरु वि अंभरा ॥ १० ॥ सु ॥ ११ ॥ काष्पि ॥ १२
आकिति ॥ १३ ॥ वसुधा ॥ १४ ॥ ओर सवे सदा ॥ १५ ॥ सु ॥ ३ ॥ १६ ॥ लष ॥ वसुमाति ॥ १७ ॥ कादि मेदिनी ॥ १८ ॥ रु पृथ्वी
२ ॥ सुकवि ॥ १९ ॥ धृतिवीर ॥ २० ॥ ओरि ॥ वसुधर ॥ २१ ॥ दिङ्ग ॥ २२ ॥ सा ॥ २३ ॥ सुमही ॥ २४ ॥ पगोत्रा ॥ २५ ॥ अ वनि ॥ २६ ॥ भन
थावि ॥ २७ ॥ विपुला ॥ २८ ॥ सुलहि ॥ २९ ॥ अथ उपमा मेऽन पद गजत विधु राधा सादित थरे पीत पट गाते जे
सो विधु राधा सादित अति सो भाउ फनात ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
सो विधु राधा सादित अति सो भाउ फनात ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
सो विधु राधा सादित अति सो भाउ फनात ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
सो विधु राधा सादित अति सो भाउ फनात ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
सो विधु राधा सादित अति सो भाउ फनात ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
सो विधु राधा सादित अति सो भाउ फनात ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८

२५५ पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः
 २५६ पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः
 २५७ पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः
 २५८ पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः
 २५९ पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः

विष्णु श्रीवृद्धमल्लोचनं
सुखतश्चैतन्मोक्षार्थं
विष्णुश्चैतन्मोक्षार्थं
आनन्दमयं सारं
उपमानं उपमानं
विष्णुकोउपमानं
मन्त्राद्याद्याद्याद्या
मन्त्राद्याद्याद्याद्या
मन्त्राद्याद्याद्याद्या
मन्त्राद्याद्याद्याद्या
मन्त्राद्याद्याद्याद्या

कुमदनीयानैवेष्टमाकसहित
जागकैसादीनितावनीपु
कतीप्राप्तमयेनेपत्ररूपि
नजिनकेमिचुहै। साप्राप्त
वहुवासीपनाहैकुमद
जीनिनकासापदेवहै।
नैसैपतिजेसगमिछेहाग
यतनै। ताकोसवेष्टमा
संगहै। जैसैजानीरा
इति सभासोमिहै। यात
इतितापितल। परपरसा
वपुषप्रतीत। पितृपुत्र

विज्ञान-विज्ञान १

[illegible]

रा. भ. ॥ किं करन वरे ॥ नि सा क व र मा रे प्र का
 स को दे ॥ ये गे म जी र मे रा म मे ॥ ६ ला म रे ॥ पु न
 रा म न ॥ व नी प्र सि द्ध ॥ ग ने स न की न दी यो त
 प्र सि द्ध वि ल ॥ म य ॥

27

कल

२३

प्रतीति के विवध पद पुनरुक्त अथ अनुप्रास विधे प्रसिद्ध विरुद्धनाम करै सब नाम को निरीष निरा
 कर भास हा सा विलास द ला स ज तर मे ग ने स म रा स ३० ग ने स की रा स की डा को ई पुरान मे का य मे
 न दी के दी जो को ई प्र स करै पो च प्र का र दोष क दे नौ को प्र का र को न दी क दे हो हा क दे ज प व प्र
 का र मे दोष न के दो प्र का र न दी मे प दोष स व नि कर त है ति र थार ३८ औ रि जा नि ली जि प ति हरि
 च र न दा स न ते न द ल वि व ल भ र सा र्य दोष नि गो यः ४ क वि व ल भ मे प्र थ को की नौ च र्च दे न
 म म र क ति पा री न सो क रि है वा द स चे त १ भाषा प्रे थ न की क कू न दि ग न ना की चा द हू ड त ज
 हां प हा र से वा म न चा द न था द अ थ प्र थ के कू पे क द य द वा क र अ र्थ दोष को ल क न भिन्न
 भिन्न पद के रै मि रि ता थ न दी ने थार य मे फ न वा क्य दोष प द मि ले न दी जा दा दि क मां दि य नि य
 दोष ल क न वि चारि क प ले षि जां दि य अ स म र्थ ज न दिं थार वा क्य म दिं अ प्र यु क्त नि द ता र्थ त ज
 क नि द ता र्थ अ स म र्थ म दिं भे द कि नौ क वि कु ल ज ल ज इ नि य दोष सो जा गु न न दी हो य ज्यो मे
 सो ल क न की जि प तो अ नु कर न मे स व दोष गु न हो त है थाने औ रि कर नौ कू पे अ ल वि ता र्थ को
 भे द वि रु द्ध म ति सा क वि को ज इ ल जा व्यं ज क को ज अ र्थ म दिं प के दो ज मू ल प द रु अ न भि द न
 वा क्य मे भे द कि नौ क द अ नि य म र्थ र ज नि य म क दो को दोष हो य द य क दि अ प द मू ल सो भे द ह
 मि फि नि स मा प्र पु न रा त्र म ह सा न द ड ति मे नू न गु न अ धि क ज प द गु न को न त ह ४ उ द र क त र
 नी जो र थ को कू त दि न प त्या गु जो ये रे सो सु प म हीं औ सो अ ल य ल घाय ५ इ हा ला नि भा मे दे या

च ३ म
 नि दे प्रा मे र क र का
 स व न क स ने मि न त

राम
 २३

असुभजो है वृत्तगण ३ सो ओ २ पर के जोग ते दोष है
 होत पद दोष में जो दीया संगल प्रतीति में ५

नो

नै विरुद्ध मति कृत न दोष सौ भी संभव है अमं लयं ज क तो प्रकासित विरुद्ध सौ मिलै है दोहा दोष
 सवे गुन होत है लपि अनुकूलिके मो दिखौ मोति कि प्रलाप में स प्रवी च यों नहि दम जो कि आदि
 अनु करन मे अंत भूत होय गे मल्ली में तू या तर दै क दै थो अ सैं जानि प पत ना तो दम लिखो औ
 जो दमारे प्रेय ते औ दि प्रथ में वी च सोई प्र अ अ य र स र द म में सें दै द ल प्ये उ दा हर न अ सम र्थ सौ
 दि जो दि यो क ले स दि अ स भ औ रि प द जोग मिलत पद वा को अ व रि म दि प द सें दै दि से होत ल
 जो कि दौ घ दोष व प द वा क्य द म द होत ज लिये न भेद क य पु नि सु मन वा य को ग थिय
 द ला नि सु वा क्य दि में ल स त अ नि सौ सु प्या त सो औ रि वा अ य तो त ज्ञा न
 अ स त उ दा हर न इ ति प दि ले प द दोष क द नें लगे एक सह में ज हो दोष न हो अ सम र्थ को उ दा हर न
 दि यो क ले स त हो को दो हा सेवा ही तें होत व स क द म द स न रे स र रि र है स रि नो नि तें पा वें क दों क
 ले स ८ अ सम र्थ दोष दो य अ र्थ के सह में होत है एक सह दो य अ र्थ को दो य प द वि भाग क रै वि ना
 द म रा अ र्थ को क दै जा दै अ र्थ दी ज प त हो ता को स कि न हो य दै ता सह दो य अ र्थ को दै पै जान वा
 ला को न हो क दै कि न हू क द्यो न दीं या तें जो भी प द ति जा नु श्पा दि वि षे ग म ना र्थ को क द न दै अ सैं क
 ले स सह दो य अ र्थ को न हो क ना म ज ल ता को ले स औ सो प द वि भाग कि पें होत है सो अ नु क र हा ज
 ल क न को य व दि त प्र ती त हो त है ए का क र सो क ना म ज ल ता को जान नो इ हो स मा स में कि ए भ यो
 द म कू लि वी स्तान में से परि वी स्तान में दि यो है अ स भ इ ति अ स भ उ दा हर न दि यो है दो हा ता प त र्चा ति

दम भूल ठो स्तान में
 संपर वी स्तान में दी
 दी को ३ ने में पद वि
 भाग न ही हो ता क
 ले स में पद के वि भाग
 ते स स र्थ न ही दि
 छे ॥ तें जो अ य म
 प र्ति में तो स मा स ही
 न ही होत यो ते य द
 प र दोष न ही दै म है

अष्टादश न दोष
 पद के स म में होत है ॥
 र क श द में न ही होत है

असुभजो है वृत्तगण ३ सो ओ २ पर के जोग ते दोष है
 होत पद दोष में जो दीया संगल प्रतीति में ५

ले २ शा हा प्रे क को को य
 हो २ शा नि पा प र सो ज्ञा न
 य र २ ४ सौ ज्ञा नो धा द को
 इ शा को र के त
 न ल क न का
 न ही उ द ह को
 नो ते दोष
 होत है सो ज्ञा नो द है

विर कर क

जोगे अस भ ग अ भ ग ल प्य ज क य प द दोष है ॥ सो ओ २ पर के में जोग
 मो दि ॥ भयो मिलत जो दो हा को प र है सो ओ २ को ज म है यो ते अ र्थ ते र के क व क
 होत है सो ज्ञा ता व त है ॥

असुभजो है वृत्तगण ३ सो ओ २ पर के जोग ते दोष है
 होत पद दोष में जो दीया संगल प्रतीति में ५

प्रीतम कुलदीपक प्रिलत विरह मिततकाल ॥ जैसे वने दोष मिलत है ॥ सो मिलत पद जो ॥ २४ ॥
प्रीतम कुलदीपक प्रिलत विरह मिततकाल ॥ जैसे वने दोष मिलत है ॥ सो मिलत पद जो ॥ २४ ॥
नको प्रणम करत है ॥ सो दीपक ही दूत कहते प्रणम ॥ सो तब दोष ॥ २४ ॥

कस
२८

अवहीरही आलबाल बकि बाल प्रीतम कुलदीपक बुजौ विरह मिलत तकाल ॥ सुषु उदाहरन
अहीनरैक वाचक को है जो पद जहां सचाहि ए सो पद तहां न होय प्रीतम कुलदीपक के आसै मिल
त पद चाहि ए सो प्रीति ठौर है दीपक सो बुजत सो जोग भण दोष भयो सो वाक्य दोष पद दोष वाक्य दोष
होय दोष ग्रंथ दोष को लक न नदी या ग्रंथ में ता सो भ्रम भयो है अग्नि में जोग विना बुझत अमंगल न
हो मेरे मन की बात सबत म हूत दो ना हो दोष न हो हूत के सब हू कि गदो ज्यों ॥ आदि अम
गल में दोष ग्रंथ ही को सह होय पदन दो के हो क अ प्रकाश में पद दोष में विना सम हू दियो है
पद संयुक्त क्रिष्ट आदि ती न दोष पद के सम हू ही में होत है एक सष्ट में न दो होत है अष्ट क्रिवा
क्य में आ समा सम वग को अ रि पु निता स अ रि ता को लेत प्रानंद र भष न भष सषा पु दत न रुचि
करो कल्याण ॥ २४ ॥ भष न ता गता को भष पवन ता को सषा अ रि ता को रि पु जल ता को दाता मेव
इहा समा सह है काय प्रकाश में वाक्य में ओ क दियो है ता की भाषा न प्रकार जप ही ह में सु मौ सत्रा नि
ज का न पती नि दोष छोड़ि अति कटु आदि दोष एक सष्ट में भी होत है औ पद सम हू में भी होत है य
ह भेद है सो भेद न हो कि यो क्रिष्ट के आगे प्राय दोष लिखो यद कम तो काय प्रकाश में भी न ही
साहि न दर्प न में भी न ही इन ही को दोहा क दत सषो सो दालि मि सवन विहार की बात तन मन
लोचन लाल के नौ नौ पुलकत जात ॥ दालि प्राय एक सष्ट में दोष समन वाय की गे थि इ हो वा
क्य में भाषा में पदांतर संजोग विना वाय सष्ट अशी लन ही वा वव है लह लही वे लिनि उनै उनै आ

काय प्रकाश में पद दो
ष में अमंगल ज्ञान
उदाहरण में
विना शश द दी प्रो है
सो गत अक्ष को है
इना में सो पद दोष
अक्ष को शब्द दोष
होत है दोष

मिसे
समूह

काय प्रकाश में पद दो
ष में अमंगल ज्ञान
उदाहरण में
विना शश द दी प्रो है
सो गत अक्ष को है
इना में सो पद दोष
अक्ष को शब्द दोष
होत है दोष

मरी की दृग्गती वरस रहे की बायें रूपादि अनिष्टावृत्ति प्रतीत
को ससन हें के राव को रूपावमें

कितने प्रती

यद्यपि ३५२०५५५

तम रूपावृत्ति प्रतीत
गन ही प्रतीत प्रतीत
कहैं २५२५५५५

५३३३ ५३३३ ५३३३
प्रतीत प्रतीत प्रतीत
प्रतीत प्रतीत प्रतीत

क

प्रतीत प्रतीत प्रतीत
प्रतीत प्रतीत प्रतीत
प्रतीत प्रतीत प्रतीत
प्रतीत प्रतीत प्रतीत

यद्यपि चंचल उदाय गयो ता दो विन चा के हिय रा मैं प्रसिद्ध होय सो जहां क विना मैं थैं न हो दोष पंच
मम गनै नो हें प्रिय अचक्रे दक देन अचक्रे दक विसे घन को नाम माय प्रसिद्ध निजा नालिषो ता
नाकिन हें सो के तिक सहा के यो दा रय को असे इहां न हो लेत हैं इहां अवाचक जानि पक पेत म
अभव नमत नो गइ हें दूषन पदों सल पदे विसे में से दिग्ग इहां न विभाव यत्तर पके सिद्ध यत्त वि
भावना दिग्ग जानि सें दिग्ग अ पद सक्त न दिं लोक लाज पुन रुक्त अर्थ किय पुनि दूषन दूषन सो कि
तो भेद लिखौ न दिं सा फ करि अति कट सुवाक्य में पद मदी को न भेद राख्यो न थारे २२ तम शति
तम पद चो थोत की आदि लिखौ जा मैं दोष काये दै क विज को रें वें स योगत न भोग मन चा दचित
दित की भां वरि सव भांति व नी व नी दै नो गरि न वे लो अल वे लो रूप रा मि जे लो स वी रि स दे लो मे गर
नो दे व रोग पारि वार पय तन वात ह की वा सो ने दू से सा का फ चलि वो नो अ नो दे त म नो ले आ उ वा दि
र हें य हो लो गी ज क के स के ले आ वों वा दि फ नी सी स म नो दे २३ य द लिखौ हा त मारे नो ल्या उ ला उ ला
गी यें र द न ज क अ से क दै क वि के
दू द य को अर्थ निकरे या तैं अभव नमत नो गत मारे की वार त म लिखौ दै इहां घंटी को वार प्रथम लि
खौ दै सो संबंध को अवाचक पद के अ स विषे है नो आ यो व द ग यो इहां मा ग यो अ से चा दि प तो य पद
के संबंध विषे य द दोष दै अ से वार में न हो त मारे थन की वार त म थन अ न्या दि में पदों स विषे अ वा च
क जानि ए दोष शति सें दिग्ग को उदा ह व न दि यो त दो विभाव क ए सो नि करै दै वि से में य द दो हा की आ
दि दो हा दै वि से में जिय गे स त ज क रि लें बुद्धि विचार वचन स मु फि दित अ दित के ग दि लें स व को सा

२५२५५५५
देख रति सुदिग्ग को उदा ह व न दि
को नो वि भाव को रें वें स योगत
२२ तम शति
अप र द न न भेद क लो सो
३३ अर्थ पुन र त न है २२ २३
जो ल छन पद सक्त को रें वें स योगत
२४ अर्थ व र द न है २५

५३३३
हे म न ग
जो ल सें क र किं वा मि ली दै

३३ सो स र स वा
क वि भाव को रें वें स योगत
२४ अर्थ व र द न है २५

बुद्धि विचार

२५ को सा पक उत्त

असदोके

कल

१५ थोदि

र १४ नाके आगे लिखो देयद वचन सुंगार पर के सोत पर यह संदेह कियो सो अजोग पर हां गुरुशि
 ष्य को उय दे सकरे है तो हि जव वैराग्य सिषावों होत वतं रोम करे है तो वन ते रो गयो जो तो हि विषय
 में आसक्ति सिषावें दे ता को वचन भलो कै द मा रो वचन भलो सब को सार भगवद् जननां कं वा मा
 नी नायक को सषी मना वे है से मेव संत आदि वै सी तो हि न ही मिलेगी सब को सार प्रेम र हो से दि
 ग्य हो घन ही है सोत को विभाव सिष्य है कि वा सुंगार को विभाव नायक है हो विभाव व्यक्त न ही है
 जहां दो पर सभा में त हो यद दोष लागे है के से हारति र हा विभाव की व्यक्ति में संदेह हो हा के से ह
 के जत न सोत न मन सरव सलायत वही दियो सिगय जव दरसन की जे नाय १५ तो के आगे लि
 ष्यो दे उ हो वचन रूप अनुभाव तें आल वन नायक कियो नायका यद प्रतीति कष्ट सो दो ति है जो आ
 गे दो कान लिखते तो यद दो हा सुंगार पक्ष भी लागतों सो सोत पक्ष भी लागतों स्त्री को दरसन किं
 बा का सी विप्र नाथ आदि को दरन न तो एक सुंगार ही में नायक नायिका का द्योत हो संदिग्ध भ
 यो एकर समे विभाव की कष्ट कल्पना न हो यज हो दो पर स हो यत हो हो ति है य है को न र स को वि
 भाव है त हो कष्ट कल्पना आ अनुभाव की व्यक्ति ज हो कष्ट कल्पना सो निकारि है त हो भी विभाव की
 व्यक्ति कष्ट सो नि करति है दो हा वर न वर न ननु स डि कै छि वि आ प च दं ओर सु थि आ वे
 सष पा किलो सति वन वो लत मोर १६ उ हो भी सुंगार को विभाव किं वा करु न र स को विभाव अ
 नुभाव की कष्ट कल्पना ज हो अनुभाव ज हो करि न ही क है विभाव को विशेष न करे त हो जानि
 ए फल चला वनिहार यद भो द म र निहारि कुंज भवन के सेन को सेन वता वनिहारि १७ उ हो

३० नायक नायिका में दि ग्य नायक
 एक र स को विभाव की कल्पना
 कलि न ही न मिलेगी
 यह को न र स को विभाव न ही
 कष्ट कल्पना

३१ सो अंग के विभाव नायक
 नायिका विभाव नायक
 नायिका अनुभाव की कल्पना
 कष्ट कल्पना

३२ को करत न हो जा नीश ॥ अनुभाव को कल्पना है ३३ जानो
 ३४ अनुभाव की कल्पना कष्ट सो ॥

सजा

१५

नायका को

इसो अर्थ पुनः कहते ॥ मा ३
नमो कते ॥ नमो लेने प्रती
त ॥ नमो लेने प्रती
प्रती नमो ॥ ३ ॥ अथ
मुक्त नही होते दोषाद
स्यो लोचन पर उक्त
को की प्रती दोष काना ॥ ३ ॥
उक्त है यही अर्थ उचित है

भई अर्थ पुनः कहते

का अर्थ ॥
मानंदता यो वै
कार्ति ॥ ३ ॥ अथ
नमो लेने प्रती
नमो लेने प्रती
नमो लेने प्रती
नमो लेने प्रती

फलचलाइ बोझादि अनुभाव सो न हो करि नही क दौ विभाव को विसेष न कियो अपर मुक्त
निलोकलाज इत्यादि सरहस्य को दोहा दोहा लोकलाज कुल का निरुष साहसि पतवुता यमो
वह मोहन होय नहि मन हो लेन सुभाय ॥ ८ ॥ या केशो गौलिष्यो है जो वह मोहन होय नही या हो
वोर पूरन करनो यो मन हो लेन न की प्रतीति तो मोहन सह दो सो होती इहां इन के कहे अर्थ पुनः
लकी वोर अपर मुक्त नही होय अल कुन कियो है पूरन की जे वोर तजि सो पद मुक्त कदाय दोष को नाम
अपद मुक्त है अपद मुक्त सकहाय यो सा चादि प ९ निरुष न इति के तने दूषन सो के तने दूषन मिलते से
हैं ता के भेदन ही लिखे जे सै अनुचितार्थ अविहृद मति कृत भय प्रक्रम अथ क्रम अथ सजावि ए अतिक
दुःखि अतिक दुःख वाक्य में पद में लिख्यो है तहां को न भेद राख्यो है इहां पद में भयो इहां वाक्य में भयो
का व्यप्रकाश में लिख्यो है तनी सो अल गित नायक कार्ति अथ वा वैद कठोर चरन फेरि सें जो गी दोष को
अतिक दुःख कार्ति अथ एक पद में अतिक दुःख यो सरहस्य में अतिक दुःख उदाहरन दिपो है कवि
नरसिकर साला कियो का वनै के वो बो दियो अथ के सें जाति जियो दे घं हॉल राव बे इ दू व वा प वु रि दे
न ब्रज वाल नि को वैरी ह के दो जि ए न लो न प रे द्या वर गोपिन को एत नो सें दे सो जाय क हो अलि सव
सुधि भूली का भ्रम एक दावा वर ब्रह्म है मंचित द के निरगुन गाय दे प एक वार आय वै सें सु र ली वजा
यरे ॥ ता के अर्थ गौलिष्यो है इहां का व के वे वो इ दू व वु रि ब्रह्म ए प द वि यो य में विरु द है इ हा एक ब्रह्म
पद अतिक दुःख अथ प्रति कूल वर्न है अतिक दुःख नंदो है अथ वाक्य में वा द इ क ट की नैन वैन इ है ज
कज को मरति क फाई को सदाई क व अथ है दारे ह न रें हें द अथ सुनि के दर रेत ल फें ति डारे दाय कि

अथ अर्थ ॥

अथ कुल वर्त के
उदाहरन है

अथ अर्थ ॥

अथ अर्थ ॥
अथ अर्थ ॥
अथ अर्थ ॥

अथ अर्थ ॥
अथ अर्थ ॥
अथ अर्थ ॥

लेखने वाले का नाम
लेखने का स्थान

प्रस्तावना

आतकीने

तपक

सचिन

प्रजाती

उल्लेखों को निकालें
जो अर्थ में आते हैं
उन्हें उद्धृत करें
जो अर्थ में आते हैं
उन्हें उद्धृत करें
जो अर्थ में आते हैं
उन्हें उद्धृत करें
जो अर्थ में आते हैं
उन्हें उद्धृत करें

प्रस्तोता का नाम
प्रस्तोता का पता
प्रस्तोता का पता
प्रस्तोता का पता
प्रस्तोता का पता
प्रस्तोता का पता
प्रस्तोता का पता
प्रस्तोता का पता
प्रस्तोता का पता
प्रस्तोता का पता

इसका अर्थ है
जो अर्थ में आते हैं
उन्हें उद्धृत करें
जो अर्थ में आते हैं
उन्हें उद्धृत करें
जो अर्थ में आते हैं
उन्हें उद्धृत करें
जो अर्थ में आते हैं
उन्हें उद्धृत करें
जो अर्थ में आते हैं
उन्हें उद्धृत करें

कोई एकता
कोई एकता
कोई एकता
कोई एकता
कोई एकता
कोई एकता
कोई एकता
कोई एकता
कोई एकता
कोई एकता
कोई एकता

बही इतने में न लाल को लालो काला है जो नित को दाव पसे पिय को सज्जनो नित को कि दमारी विदा है
लाल रहे श्रमि श्रमि न न चादि निया मुस कया यदि यात न चादे २६ अधिक बनने को न प्रेथ में क दो दे
इहां इतने त हो घजा नि ऐ अधिक पद नौ फल निके म करे द श्यादि में छपे प्रपुक्त । नहि चेद
मार है सौ ० नौ वां चिक चंदन दे ० असमर्थ रत हो सु अवाचक है नित निह तार थ थ दिय क
लात हो लतु को गुरु क मित के दे सु अवाचक प वै र ही सु न हि अर्थ निरर्थ को दि पानि सु वादि र वै वि
वै पद संयोग ते वा क गत सु नि अ मंगल ० अनुचित सु क दि प्रेत ग्राम्य ८ न च गत मत ० अ प्रयु
क शति अ प्रयुक्त में चेद मादियो चेद मा तो बद्धत और आवे दे वा फि को ए न ग्रो आन की आधि अ मा
वस को निस चंद्र मा दे धै तै सो स न मुष अ मल चेद मा इत्यादि पद है सौ ० नौ वां चिक ० अ सै पद वा
दि ए चंदन रति चंदन स ह ए का य है रक्त चंदन को अवाचक जो नि ए रुचि पंक जे चंदन वेद न के च न इ
त्यादि रा सै क प्रिया के क वित में नि द ता र्थ शीत आ पु स में वि द सै र स ही इत्यादि क ल को क ला तु को
न के ये द्र स को ही वे ० कियो पिं गल में क दो है ल बु गुरु गुरु ल बु होत है नि ज इच्छा अनु सार
वा दर को च द रा कियो वि दारी ए व द रा च द रा ह आ धर को अ धरा अ सु आनिक रे अ धरा निके मा धर
र स क अ धर व हो पि आ य ह भा षा भ षन दे य अर्थ के स ह में ए ह दो ष होत है क ला स ह ० दो ष अर्थ
को न ही या ते इहां न ही को ल के न न ही ल गे मा म हा वी र इत्यादि स प चा दि ए इ न को ल क न के अ
ध प्र स द को अ प्र स द को भा धि ति है न शति ग ही ते करै करे चो ली नै के रि न कर के रि न के कु म
निक रा करी सी कर ही द ल न वि रु चि व र वै री उ र ज न सि द ज हो ते हो दा रु न रु धि र थार चै र ही दर हर
का ड कर के कर ही मात

को अधिक पद

वेद ही अवाचक में
नो निष्क है ॥
वाक्य में दो गलत है ॥
सोपा च जो नते है ॥
लेखने का स्थान
लेखने का स्थान

अनेस की कति करे

दो ला ३
कवि

फा ड कर के

कर ही मात

महा दहास कर के

हरे हर नमो भगवते शिवरात्रि १
वै २ वि ८ २ २ ॥ २ ४ २ ॥ २ ४ २ ॥ २ ४ २ ॥
आलेख निजकी जो है आलका पेगन
तो जैसी वदन पर है वैसे सी कहन में जा
वत है माने कलक के

31

कल

जैवने विरह रूखी बने मो
को लोके है ॥ नायक के
आप विरह विरह ॥
वत जो वत प्रेते है ॥
जाती सी की पल मो २ ४
मो न बली भरे ॥ २ ४ ॥
मो न बली भरे ॥ २ ४ ॥

हम नम मर दर हरि हे रि नील के व भांति भांति भूत पांति वेर ही आले आले सुषु नि की आलिका वर नि
परै कालिका के आगे दी पमालि का सी भैर ही ८ या के आगे लिखो है इहां वेर ही पद सो अवाचक
या के अर्थ न ही जा को अर्थ न ही सो निरर्थ क कदा वे अवाचक न ही कदा वे अवाचक तो जादि अर्थ में
पद राखे तादि अर्थ को न ही कदा पद तो सार्थ क हो यदि प्रतिवादि रेवे विवो वा क दोष में चादि पय
ह पद के संजोग सो दोष हो तहे त क वादि रेवे विन देह वाय र ल गी री देह विरह व ला य या ने छा य गी तो
षाय गी सुनि अ मंगल शिल गी जादि प्रेत तादि के तो उ पदेत मो दि जी वत ल ग्यो है ता नें अधिक अर्थी
र है एरी मेरी चीर मेरी छा तो पर पीर है सुत व ही भिटे गी जब छा तो ल ग्यो पीर है प्रेम की अधिकारी सो दुष
की अधिकता ता में प्रेत को टो शो न दि यो सो अनुचित है स्तुति करत निदान करी इ हो अलंकार दोष म
री नरी सो सो पद दोष चादि ए म ग्राम्य शि परी परी तन मष्टा म्प न ही क प्ये भाषा चुत मत कौ न को ह
दिय पेच क मेच क पादि लै क द नों जोग के है पी के अ विमष्ट क दे ड ला य धन के करो री उ छु म मे प
र य दोष न पतन प्रक प दो को मन अनुसर य अ हो तरे क वाच क सु तो अरु मिले ज द अरु अरु
जो ल क न ल क सो प्रेय सो मिले ना दि दृष न सु गन २५ भाषा इति उ म यो अमित द ल द य ग य प य द
ल कि नि थ र य र क भ र है य रा य री सी क है क वि गे भा ग द म व अ टो अ टे सब की ने मा रि च ट प हो ला गी
भ मि च सो पे च क उ दित मन मेच क द म दू दि स भेच क मेच क धू रि ए नि सि परी सी सबै क है बार बार दो
सो सा दि द लि प ल द्वा उ म ति जा य न सी व रियार च री सी ३० आगे लिखो पेच क मेच क पद संस्कृत
है भाषा चुत क कौ न प्रेय कौ मत इ हो अ प्रयुक्त लिखो चादि पज्ञान के लिये अ से सष्ट क विले आ

कहन में जाव है

काल कात्र २४ २ ४ २ ॥ २ ४ २ ॥ २ ४ २ ॥
प्र तो री पी ताल का दि वी २

यह पद अत्र चो

उपमाद्वय

भाषा चुत व री सो प्रह को ल
प्रेय को मत है ॥ पत लो क क
क ह्ये का व री प्र त है ॥ रा क
अर्थ सो द सो रा अर्थ मिले
सुत जो २ तो व से ल द्वा त
आल द्वा मे प्रेय सो न ही
मिल त मो र्दो छ म पी री
ति दे जि ता व न है ॥ २ ४ ॥
ता र क म्प नि न को प की
सी व प ल ला न प री
च र प री मे २ ४ २ ४ २ ॥
या सो २ ४ २ ४ २ ॥ २ ४ २ ॥ २ ४ २ ॥
प्र ते पेच क उ ल मन मे २ ४ २ ॥
मेच क म्प म त है २ ४ ॥

मैन ही भाषा

मेच क मेच क मेच क च के है
विवा च क मेच क मेच क ३

३१

तेजकोनियकरकेकरनतहै॥ तानेनेहैतेईरूपवाजतेहै॥ कवचसोईकचुकीहै॥ वैरखपुजासोईतमनहै॥
छगामोदिवेकासोपुनतहै॥ कुरुकानचंद्रवानरसादिकराहैहै॥ ओहीनोहैवहापुमरकीअनीऐना
वकीठनीआवतहै॥ सोहेमाहूतिपुनहोसोहोकेललकारतेफराठकोप्रजातहै॥ सोनेसेमुग्धातियक्ष
अपतिवचनकोसनआगतमेभाजकेभोनमैछिपतहै॥ असेतातहै॥

विष्णुविष्णुसुनहो
उक्तहै

शब्दकोसुनतहिजिस
शब्दकोउतर्कताउप
नेकोईदोषपताउ
जिसीहोवतेउतर्कता
उपजे॥ मोपतकाउक

वतहैसोपीछैलिख्योहैपदिलैरतिकदोचुपीछैचादिपसोपदिलैज्योहोयअविमृष्टविधेयोससो
कहैकवीसरलैय १॥ पैसाकैरूपयाज्ञेसुदिकैसुदिमोहरदेद्रपदउम्रमकेउदाहरनमेलगोअ
मृष्टविधेयोसकहैनहींलगैहोयइतिपतत्यकषकोलकनकियोहैसष्टसुनतजासष्टकोनदिउ
पजैउक्तधंयोसोदृष्टनकविमैकदियनपततप्रकष २॥ उदाहरनवाजैतनपरवाजैकोचकेचु
कीजसाजैवैरषवसनराजैषगचोकासोपुरैविविधकटाछवेकुडकवानचंद्रवानवानअव
लोकबोलैविक्रमभोरैभुरैयोसोएवहाउरकीआवेअनीवनीवनीहोकेदविजातिवनीफरिगदको
पुरैजैमैनववधूसतिपतिकोवचनहारआगनतभाजिवैसितावभोनमेउरै ३॥ इहानपरकीसमता
सोनगानेकोउक्तधनहींकेचुकीसमतासोकुवचकोउक्तधनहीयदकोनप्रथकोप्रतग्रह ४॥ इहोचा
दिकनिनिदाकरैदेतद्योअनुचितार्थदोषनहीपतत्यकषतौजैसोरचनाकोआरंभकरैतैसोनहींनिबादे
अहोतैकरतिथोमिअर्थतैप्रपेअरिअर्थकोजादयाथोतैरैकसोजानिपदृष्टनकवितामाह ५॥
उदाहरनहमसोदितसोइतसोहककैनितिकोमिलिवौवदरावतहीसुकिनेदिनवोतिराएकवि
मंडनवातनहींवदरावतहीविनहीअपराधउतैउनकेसकेअसआवदरावतहीरंगलालभए
करलालनकेपगभामिनिकेसदरावतही ६॥ लिख्योइहोपदिलीतककेअर्थकोहमरीतकमिला
ऐवोथहोतहैसोनिर्मलयदकायप्रकाससोनहीमिलेसादित्यदपनसोनहीमिलेकायदपनसोनहीमि
लैदैओइतप्रथनिसोचिहृदसोईहमदृष्टनभ्रान्तिभंजनीमैओरसरदसमैदियोहैचितदैओसैदेषियो
हैगउवदरागोलभ्रान्तिभंजनीकोकरैदोरवोरमैपोल ७॥ अनुचितार्थआदिनित्यदोषहैतिनेगुनकि

अनुचितार्थतेउचित
अर्थमेंअनुचितभासै
नहोनेपहै॥ इहोतिव
विनिदाहीकरनहै॥ जो
यानेअनुचितार्थनही
उक्तधनकोअर्थउक्तध
नकीवदरावतही॥
ओरअर्थकरकेसोअर्थ
प्रपेअर्थनही॥

इहदमसोतोसो
सोहोहैकरकेनाहो
सोनिषकोमिल ॥ ४॥
इहोवतहती॥ अथ
वातनकेपदवावती
कोकितनेहैपेनती
नगराहै॥ कछुनाप
कोतेअपराधभीनही
भयेपिनापराधही
उपरनायककेरसप्र
मकेअसताका
इहोवतहै॥ उनका
मिलतनहीहोएनके
यहो॥ नायकके
लाललालायेहो
कायनकोसुखावतमलनेहो
ओरवतेहो॥

२ला३मिला३१

अनुचितार्थतोउचितअर्थमेंअनुचितभासैतहाहोयहैइहातोकरनिनिदाहीकरनहैयातेअनुचितार्थनही

कल
३२

आके मन्त्र अतिवर्ति
तसे भवका अज्ञानक
होना प्रहदे पुन प्रेता
आयुष्य धर्म है ॥ क
मि ५ चानक फीतालक
मेले भवे नायक के भी
५ चानक फीले भवे
नायक सो पाते ५ वि
लक्ति से भवे साधार
रा धर्म है ॥ ५१

अधिक विशेष
व्यंजन यो किंवा
होना विदुष

न
३१६ अथ प्रेता निरुद्धी
अता दोष है साधनी
च नात है कोते ॥

योतदो विरुद्ध मति कृत भासै है अधिक पद गुन कियौ है तहां पुन रुक्त भासै है कवि प्रिया की ही है म
करी है जो दोष कारै तो अछो न हो लगे औ वद औ रिही रीति सों चले अर्थ कप कपद में होत है उ
न सो रोम दावा की दियो है अथ कुवल याने द मे स दे द व र्म रु उ प मा मे स द स ल त्सी ज दाल पा य मत ज
कुवल पाने द को उ प मा त हां क हाय ३० वर्म उ प मे य औ उ प मा न प्रा की ज हां मा दृष की ल त्सी क दि प
सा भाज दो भा सै त हां उ प मा अ ल कार होय यह कुवल पाने द को म त हो हा दे सी की रति को भलो उ प
मान रु उ प मे य त हां का क ता ली य को उ दा हर न न दि द य ३१ दे सी सै त दि य प की स र्ग की गंगा को
अव गा द न करै है तै मे स र्ग की गंगा को अव गा द न त मा री की रति भी करै है त हां जा उ त मा री की ति भी
प द वै है य द अ को उ दा हर न औ सो जो मत है तो का क ता ली य द उ दा हर न दे नो न ही यो का क की आ ग
म न क्रि या सी तो नाय क की आ ग म न क्रि या औ ताल के प त न क्रि या सी नायिका आ ग म न क्रि या यह
का क ताल को अर्थ का क ने जे स चो च सो फा रि फा रि ताल को उ प भा र्ग क यो औ सो नाय क ने नायिका
को उ प भा र्ग क यो या यो र मे वि क्ति वि शेष का भयो अ वि त कि त से भ व तो सा धा र न ध र्म है न ही
मि ल ने को न हो भो ग कर ने को स भ व या सो आ यो न च नि क हो उ दा नो का क ताल की क्रि या सो नाय
क नायिका की भी क्रि या सों उ प मा नो प मे य भा व है का क सो न ही तो अथ म का क की व द स र्ग ति कि
या सों भी उ प मा नो प मे य भा व न ही चा दि ए त मा रे म त से औ सो भी व ने न हो य सा न पो कि की औ वि श्रा
प नो जो य के रि स धी होय न प को रै को य ३५ दो दा ही नो प म अ थि को प म रु द्द र न को उ के
द म स द का व प्र का श मे द व न दि य क दि भे द ध- कु का व की त र हें उ प मा तो है ही न है कै अ थि

३१ के उ दा द का त्याग होत है ॥ अरु न ही तो
का व प्र का श मे द न के भे द कि छ न ही हो क का व
छो छो का व ता की त ५ उ प मा तो है सी न है अधिक है ॥

जो औ द नु मां त प्र
हो टा का व

क
३१ सी तो न ही च
जे से ३५ न है तो

अचानक होना

तालि
सी से ठ

३२

स्थापन सिध

कहे चंद्र ज्योतिष दनाय का दीना की पुनि जानि चेद्र की ज्योति सारो धी ज्योति है जा की हरिन की आषि
सारो धी आषि है जा की कोई अलंकार होय तहां सो भावि शेष चांद्ये यद् मत इन को हे फेरि उपमाना
लंकार में दियो है सकटाकार कु रोहिनी ता रागा सपि कान नगाड़ी की सरति सी रोहिनी के तारों की
ज्योति इहो कदा सो भा भई फेरिकार क दीय क मै उदाहरन दियो यथिक जात है आ वत दे दे पै है पूछे
हैं इहो गमनादि क्रिया सों एक कर्त्ता को अन्वय या सो कदा विवक्ति विशेष भयो असें स्वभावोक्ति आ
दि में विवक्ति विमेष विचारि लेनो जहो सो इत्यादि वाचक सों समता तहां उपमा उक्ति द्वारि चरण दा सह
ते हृदय विवक्ष्य भ में मंदे हरि रूपाम् ५ अथ अदाष निरूपन कहे दोष है उचित के रिक है दोष
गुन दोष कहे दोष नदि गुन नदी असें कैत ज्यो य १ कोय जु कव ता जहो १ उहुत वा चर सु मो दि गो द
दिकार सवर नि ३ अतिकटु गुन जु कदा दि ३ ऊह नुह की वाद धरि सारो अरि नि उचारि विकट सुभ
ट के बट कौ का रि है उ म दि जारि ३ इहो गौ द र स व्यं ग को य नु क व ता की उक्ति में अतिकटु गुन ले क
जा रि क वा द ह १ की ने क म अ र्त्त अ भे क उ र ग भ ते ह न स न क रि ग र्ज ४ इहो उ ह न द न सो न वा
य त हों क व र व न गु न आ दि प ट सों व र वी भ त्स सों त ज्ञा नि ए अ र्क किर न को दे धि कै य द वित के मन हो
य व्या धि धा त अ त क इ हे दे त पौ प को षो य ५ अ ग र्गो द र सर दि न है या तै इ हों क व र व न ते दो ष भी त
हो भ यो यौ गु न भी न हो भ यो क व र व न तो र स मै दो ष क हे गु न दे य द क हो दे व र स क र क र न है ग र्ज
न व न म र ग र्ज क र्पा ट ल प टि प ट के म हो पा के न को ग दि वा ज ६ य ह मी र स दे या तै गु न दो ष क वि न
ज हों न हो रू प रों के रिकी म यू ष त दो ष व ३ क तै तो ग र व में प स रि ले चू पी न हो इ ष ज हों म दे जो पि प्र

जहां रा दोष उचित है
तहां दोष ही है ७

सं. ६२ म. प्र. ३ म. व. ३ न.

चित्तचित्तिचार्यामैभाव
 २. चित्तचित्तिचार्यामैभाव
 २. चित्तचित्तिचार्यामैभाव
 २. चित्तचित्तिचार्यामैभाव

नदी

नाम प्रतीक
रौकन है ॥

सौन्दर्य के साठे गिने नहिं कि सो न डर नो नहिं कपौ तहां लोपी
जैव कता सो व सी दे लोपी

तुष्टनीच

मरुड

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
इति श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
अर्जुनस्य वचनम्

पृष्ठ ३ मल्लिकाजिनक शब्द
 लीतल्लुवकी पल्लु
 जिनक हो ॥ ३ तद्वि
 यो जिनका जिनक हो ॥ ३
 तो मल्लिकाजिनक शब्द
 लीतल्लुवकी पल्लु
 २३ के २३ तद्वि ३ तद्वि २

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ पंचकलशो दोषहर् ॥
 तिस्रोऽक्षरसंज्ञकः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 तिस्रोऽक्षरसंज्ञकः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ਜਦਮੀ ਲੀਨ ਹੋ ਜਾਵੇ

[illegible]

तादिनकरीकीपंतस्वली
को०५४जा नलि नइका
विद्यलोजा पमीतेईहा
नेनेपाया ६
म्यली

जीववैतन
विद्यानताज्यवैक्य
तुल्यैतत्तुमीयम
कालप्रवृत्तिः॥ नमो
हस्तानकीवाचा
॥ नमोप्रतिपादप्रति
पादकालप्रवृत्ति
नमोमीयतुल्य
॥ नमोमिलन

२५
 परकीनापकाको कि
 विनहोनावितावतमे
 २५। विनहोने २५। कला
 ला विनहोने न जे न
 हाप्रावतमे। को
 २५। न जे न। कला
 विनहोने को विनहोने
 २५। न जे न। २५। न जे न
 २५। न जे न। २५। न जे न

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
कथनं श्रीललाट
शक्तवलीत दोषन हृद
पुनश्च ॥ ४

मोकरिक...
गके
श्रुति

[illegible]

चक्रान्तके प्रतिमोको नदी देवत
भेजे तो है ॥ ३॥ का सा दो तरे जा दो य
पुनः शक्त हो जाय प्रेम उभय को ॥

वैभवे

विश्वको सा २३३३३३३३

देखो देवतानही

मारी सदिमारे नुसवचक सदित कलि मों दिन एन एहर को रवौ हार लघत हो नाहि ॥ १५ ॥ कर्नी भरन चर ॥
 सेना ॥ प्रतना ॥ कदवादिनी ५ रुधुनिनी ५ अनी किनी ६ बल ॥ सैन्य ८ लहफिरि चक्र ९ अनीक १० बरु
 चिनी ११ बूद १२ सबल विन्यास १३ किय १४ संप्रहार १५ सें १६ राट १७ संजुग १८ कलि १९ आहव १९ हल
 द अथ हो नता मैर सिक प्रिया हर तें दे घन को डूय दीन पगई इतौ लिखि हलिवि ची वी दे धि मिल्यो मन
 होइ मिली मिलिषेल वेहू को मिली मति मीठी अथ सें मैरि चलाय हो के सब के सें हे का फु कु सार देरी
 होइ देन बार सें गार के तार जौ दुरि लाल ह में ल में ई वी १६ अति दयाल तल सी सुनो सुनो तल सिदै का
 न गोग विना सक विरद तय अ वउ प सें देन प्रान १७ अथ दयामें जा डू वरे नूतन पथिक फेरि कदति
 वरजाद प्रियतन जीवत पाय हो पी के करि हो काद १८ मति अनाथ जीवनि दलै मति रे दने गवार क
 दि को उतर दे यो चदि जम के दरवार १९ अथ अथोतर संक्रमित वाच मै अथोतर संक्रमित में हो
 पतनिक मति देरि भाषा भषन को किल दै को किल २० ज वीर त मै करि दे देरि २० दूसरो को
 किल स एनिक स्मा होय के अरि अथ मै गयो मधु र श ह कौ क रो सब को मनो हर लागे अ सो स ए को
 जव बोलै अ सो अथाम द मै करि दौ प रि दै ग दे ग दे व दै गी यो म को सर्ग च दै गी २१ इ हो ग द को अ
 थ सो र द स ग र द को अथ धुरि अथ प्रसार न मै जो म कर मै क हो तो दिति हो रि नि हो रि २२ दे रि दे रि मे
 ओ र लो सो द करो रि करो रि २३ इ हो राजी कर नौ दै द प मै अथो अथो पी यो अ सें जानि अथ मै य हो दै
 य हो दै अ मै जानि अथ नित दोष सक वि विवक्ति अर्थ को प्रत्या कन दि हो ता ता तिर स्कार क
 अरय करै क हू उद्योत २४ कवि को जौ विवक्ति अर्थता की प्रतीति को न ही कर वत दै या तै गत स

क ३
३५

३ हो ग र द हो प्रवासी यद
 आये को नु पुन रक्त दोष ३
 होय र ग र को अथो हो
 हो मिल के र हो दू स राग
 र को अथ २३ र को
 अथोतर संक्रमित वाच
 मै अथ न हो ॥ ३॥ सें हो
 किल को किल मै राट को
 विल द्या द को अथो अ
 अथ मै मिलो प्र द अथ
 त सें न मै न वा अथो ग

दोहा ३३
 ३ हो ग र द हो प्रवासी यद
 पुन रक्त दोष ३ हो य जी वर न
 ३ न म हो ॥ नाथ कन पका को
 न सन कत हो वना व न हो ॥
 ३ हो रि मे के ले गति प्र
 क के दे र ॥ त स ॥ प्र ॥ ३३

स्ये
 ३ हो मिलिषलिष द
 ३ हो मिलिषलिष द
 पुन रक्त दोष ३ न ता
 ३ न म हो ॥
 अथ मै अथ ३ को न म
 दोष ३ न को यो ते वी
 ते हो रि २३ हो ग र द
 स व हो ॥ ३॥ न ल सी
 ल सी य ३ न ल सी
 न ता मै अथ ३ न म
 ३ हो ग र द हो प्रवासी यद
 ३ हो य जी वर न
 ३ न म हो ॥ ३॥ पुन रक्त
 ३ हो य जी वर न
 ३ न म हो ॥ ३॥ पुन रक्त
 ३ हो य जी वर न
 ३ न म हो ॥ ३॥ पुन रक्त

मने ५ वाचन विवक्षितं च न प्रोक्तं तन्मते
आदिशब्दयुक्तिके प्रयोगे ५ वाचन की कही है
मने निरुपेक्ष है

मने ५ वाचन विवक्षितं च न प्रोक्तं तन्मते
आदिशब्दयुक्तिके प्रयोगे ५ वाचन की कही है
मने निरुपेक्ष है

लाघवम

५ वाचन विवक्षितं च न प्रोक्तं तन्मते

को ६

लाको २३५३ गोमं नो
तम सो ५३ गोमं नो
तो गो ॥ जो ५३ रकी ५३
च न लै चले सो ५३
दो ५३ तम नो ५३
नो ५३ रकी ५३

को ६ वाचन विवक्षितं च न प्रोक्तं तन्मते
आदिशब्दयुक्तिके प्रयोगे ५ वाचन की कही है
मने निरुपेक्ष है

सूत्रेण समये प्रवाचक निरर्थकपत्तिर्यदेष कवि नै भलो नापिका कयोः सो नायका की स्तुति विव
क्षित है भलो पुरुष वाचो सह है सो नायिका की स्तुति को प्रतीतिक राव न हो भयो ग्रंथ सम
र्थक विका विवक्षित चलनता है ता आदि शब्द मारन को कहें गो ग्रंथ प्रवाचक निरर्थक तो चलन
एर नाथं आ कविको जो विवक्षित अर्थता को निरस्कार क जो अर्थता की प्रतीति को करवै सो ऊ गु
न न हो होय सो विद्वत् पद इहां कविको विवक्षित अर्थ है पर सो सो अना सक पद स्तुति ना को हर क
रै सो सो अर्थनिक सो सर्व कर्म बाह्य आदि निर्दोषा तौ नित्य दोष जान पत हा प्रसन्न अचिता र्थ नित्य दो
ष होत है तो विरुद्ध मति कृत कौ न नित्य दोष होय विरुद्ध मति कृत परिहास मै गुन हा ज है एक ही पुरु
ष को नाम विवक्षित भी है न त भी है ता सो हा म् कर नो विवक्षित धूम ज स के सो ई दो पा स सम धी सो सम धी
को आ पु स मै पत हा स ध ध आ ने द म प्रा दि के उक्ति मै नूत पद भी गुन बा ही प्र म मा ही पि य ना ही ग ही
वा ही द म ना ही द म ना ही पर छा ही सो कह न है त म सो न ही क द ति ए त ना ऊ पर सो जा मों पर त है इ
दो गुन भयो पत त्र क र्थ क हं गु न दे उ को दं ड को षं उ कियो जिनि आ नित्य म सो हा र सु जो ति है क दो
जो रि मै पानि ४५ पूर्वा हं मै स को पर स ग म जी को वा क उ त रा हं मै ब्रा ह्म न जो नि वि न य ज न्त शो र
म जी के वा क उ हं दो ष न ही अ य स मा प्र पु न रा त गु न जा हां चा ह र है शो स मा म क रि वि शे ष न न ही र है
त हा स मा प्र पु न रा त दो ष न ही दो हा ने पि य स धि पर दे स को ज व तें गौ न न की न तो दि से दे सो कु स ल को
त व तें दौ न न ही न ध ५ इ हां चा ह र है वि से ष न भी न ही दं या तें दो ष न ही स मा म क रि वि से ष न मा व दे न
मं य द दो ष है य द सा दित्य द पे न है वि द्यारी गो गो व न जे व दित कु च मिति अति अधि का य त्यों तो कि

चलन को न ही ५३
जो ५३ स म ध ५३

को ६
विश्व को उरु धू त जी ही
न न को उरु धू त जी ही
सो ५३ र की ५३
दु न्त पर हा स मै ५३ त म धो

दो हा
दो ५३ र की ५३
न न को उरु धू त जी ही
सो ५३ र की ५३
दु न्त पर हा स मै ५३ त म धो
को ६ वाचन विवक्षितं च न प्रोक्तं तन्मते
आदिशब्दयुक्तिके प्रयोगे ५ वाचन की कही है
मने निरुपेक्ष है

जो ५३ र की ५३
दो ५३ तम नो ५३
नो ५३ र की ५३
को ६ वाचन विवक्षितं च न प्रोक्तं तन्मते
आदिशब्दयुक्तिके प्रयोगे ५ वाचन की कही है
मने निरुपेक्ष है

जो

[illegible]

धीकी को है दूषण पोष ५३ औ सो सध्वाने क द्योत हो दूषण पुष्ट कौ करि दोष सर जो पी कै दोष कहै
 है त्रयो दोष होत है वडे वडे हर मोहि ऐ गडे कहै य दनो ह गयो क हा वद का ह लो क द्यो द्र नो वन मोद ५४
 वडे वडे शृंगार के प्रति कल वर्तन ग ई की ठोर ग यो गत से स्मृति का ह लो तो अ प्रयुक्त अनु करन में दोष न
 हो अ में और भी जानि पं आ छो ले गै गु न त हो न ल गै दोष हो दे दिवरो भलो दोऊ न ही दोष अ दोष न दे रि
 ५५ अथ रस आदिको अ दोष रस संचारी या यि ज हो विना नाम न बु जाय कारन कार ज हो त ज ह संचा
 र स क हा य ५६ रस औ संचारी औ स्थायी ज हो नाम कहै विना न ही स भु ज पर त हो नाम कहै दोष न
 ही औ ज हो कारन कार ज हो य एक कारन हो य र स रो कार ज हो य त हो भी दोष न ही दे द थ र र स हो स
 पि य ति य दै ला ज स रूप म र ति वे त सि गार र प य ति मि ति य र ति स अ नृ प ५७ उदा र स को और स वा
 च क शृंगार के औ संचारी ला ज को औ शृंगार र स को स्थायी र ति को नाम कहै विना प्रती ति न ही हो ति
 है या ते नाम कहै दोष न ही र स ध्व नि में करै है संचारी आ प नी क्रि या क रि जा नि य त दै सो उ हो न ही है
 नि र की चित व नि वा ल की मि ली ला ज भ य ले स दि य उ मा द रु मो द नु त न र लो दै ति क ले स ५८ उ
 हो भी नाम कहै विना संचारी न ही जा में जा य ति य की उ त्स क ता ष री चे च ल ता उ प जा य ता सो ला ज भ
 ३ अरी हरि ह विलो क ति आ य ५९ ति य की जो उ त्स क ता सो चे च ल ता कार न उ र्ज न को ड र र्था दि में दो
 ष न ही औ सें जानि प म भा प्र का स में र स औ र स दो ष औ अ दो ष क द्यो या ते उ हा वि शे ष क रि न ही लि
 षा वि रो धी र स को स्म र न में दो ष न ही जो कर सो कु च कौ ग द त जा व क द त व ना य मो द ग अ ज न को
 र चे सो र न म सो ल षा य ६० उ हो क रु न र स में शृंगार को स्म र न है शृंगार क रु न सो वि रो ध है तो भी हो

[illegible]

इति नाम कृतं प्रकृतं उत वदते

उत्तमके भावमै करग २४ है वै धो ज्ञेयाय ॥

कल
३३

^{कवीन} घनहीं प्रहो शृंगार सौ करुन वटै है कवेन पिय दसि करग है रिस करि गहेन के सजै सौ के ता चर रहे तै सै
^{हावक स्वे} गण विदेस ६१ ^{मोक्षते} श्रेयो नायक के मरै नायिका को न गुन कदि कै करुना को पोषै कवित की बांधी बात
^{पवडा कति} में विरुता दोष न हीं कवि जस्याम कदै पाप १ न भर अ सि ३ सत ज सदा स की रति त्रै ज हां जल न हो ज
^{कमल} लजा तै है को थ श्रु नु गगन के रेखा को क द त लाल वर षा में मान स को दे स उ डि ना त है चे दिका पि वै च के
^{नान से रीत} रगर जै हीं ना चै मोर भाषै ज हां बारि सों मराल नि सु हा त है चे पा पे न भै र न व सं त माल ती को मोर फूल
^{मरत} त श्रेयो क नारिल है पाय दा त है ६२ स वै शाना रिके आनन के मद के परे फूल त है च कुलै य द जो न
^{मोक्ष} इ में न के बान सों फूटै दियो श्रौ क द्य क दू सौ क वितै सै पि छान ड फूल के काम के बान श्रौ चा व श्रौ भौ
^{मोक्ष} रान की पत्रे च दि मान द्यो स में के जनि सों म क मो द फूलै न श्रेयो के निके फलै न ड ६३ सा दित्य द
^{मोक्ष} पन में काम के पुष्प को तु भी ना म क सौ है ३ ति श्री हरि चरन दा स कृते वृद्ध क वि व ज्ञ भे श्रौ दोष नि रूप
^{मोक्ष} णाम ६ श्रेयो काय चे दिका तै क विन सम स्या पूरणे पाय लिषे है श्रेयो गुरु वस्तु को ल बु क दि व र नै स हि
^{मोक्ष} काल १ कल्यांत २ मै हो य दूर श्रु व लोक ३ तु क कथन मै वस्तु गुरु ल बु कर वर नि श्रेयो के श्रेयो स
^{मोक्ष} दिका ल है र प्र सा द ला दि वि श्य को र च न लो पो कर त भ व क त क अ ति हो भ ये वार त ल्य ज प दार र
^{मोक्ष} सम स्या हा त भ ए स वै सा नु मान पर मान से श्रौ रित र द भी पू र न हो य स म द रं धि वे की वे र को क वि न
^{मोक्ष} हो त भ ए स वै सा नु मान पर मान से बु द्धि च ला भ वे के लि ए लि षे त है श्रेयो क ल्या त ल बु ता ल द त जु गी त
^{मोक्ष} मै गुरु प्र ती क श्रु द क कर दी हो त जु कर द सै श्रौ त त ल्य द रि ज क र स ले भ सा स त र म गुरु द दर भ सो अ
^{मोक्ष} य दू रा व लोक न को ल ल सै श्रु ति दूर तै दै धै को ल स मान ता रा दी स त दी ध सो ल सै थाल सो मान ४ अ

श्रेयो क द्य क दू सौ क वितै सै पि छान ड फूल के काम के बान श्रौ चा व श्रौ भौ
 रान की पत्रे च दि मान द्यो स में के जनि सों म क मो द फूलै न श्रेयो के निके फलै न ड ६३ सा दित्य द
 पन में काम के पुष्प को तु भी ना म क सौ है ३ ति श्री हरि चरन दा स कृते वृद्ध क वि व ज्ञ भे श्रौ दोष नि रूप

मोक्ष सि ३
 प्रसाद जात को अधिक के
 तदप्रपद्य प्रत्यन ल च
 भगवत् प्रत्यन ल च

दोहा

पर्वत

पर्वत

श्रेयो क द्य क दू सौ क वितै सै पि छान ड फूल के काम के बान श्रौ चा व श्रौ भौ
 रान की पत्रे च दि मान द्यो स में के जनि सों म क मो द फूलै न श्रेयो के निके फलै न ड ६३ सा दित्य द
 पन में काम के पुष्प को तु भी ना म क सौ है ३ ति श्री हरि चरन दा स कृते वृद्ध क वि व ज्ञ भे श्रौ दोष नि रूप

प्रसाद न भ र दी दी
 विहा टी का २ बा २ सी ॥ काउ विहा
 कती ॥ न भ र दी दी
 दी र्घ री चि टी २ २ न सी न ल की छाल प्रदे की ॥ १५

कोल प्रसाद न भ र दी दी
 ता दी प्रदे भा नु थाल कोल सत है ॥

कोल प्रसाद न भ र दी दी
 ता दी प्रदे भा नु थाल कोल सत है ॥

सात लक्षी श्रीनंदने जे सु
 प्रातः ॥ जो श्रीन प्रताप
 साधु की निमत जात है ॥
 जे ही श्रीन सप्त ३ प्रे सो पा
 पाते योग्य है ॥

तुनविसेर

नदी दोहा

३ ते ता ते फे ग प . ५

५५ कामकोरुघघोडे
कहनाप्रोहोतीमेघो
२

कटाक्षनकराए

के॥ ए-प्रेरति-

अनन्तसर्वज्ञ इति

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥ प्रियम् ॥ दोहा जान

समस्या

सुप्रसिद्धं प्रमाणं

天

जो मूलतः प्रथम को ज्ञान
जो मूलतः प्रथम को ज्ञान
जो मूलतः प्रथम को ज्ञान

३. ऐसे प्रसंग में तो रुद्ध हो जाय जो जै गिक को बाध है जाय जो फेर जो जै गिक होय जो सोध्य जना ही से होय जो म
न से नहीं होयगे ॥ मेघ पर रुद्ध है ईहां जै गिक को बाध जो फेर म पने मर्य क के य जना ही से लभ
ऐसे

करेंगे तो नदी को ग्रंथ भयो तो ग्रंथ व ग्रंथ बाध न हीं जो लक्ष्म ना होय दोहा सोत लता दिक के लिये कविक
रिहें अनुमान म वे गौरि नै व है न हीं य द ते नि ग्रंथ ज्ञान १५ सब गोर में अनुमान न हीं लगे दोहा सुप्रतीक
दिसत लघु ति वारि वाद र दि चा दि बाध होय गो रूट सो जै गिक को कवि नाह २६ वारि वाद मे घ पर रूट
हैं जो पानी भरे हैं ता पर ग्रंथ सो लगे हैं जै गिक हैं सो न हीं जामे जाय गो सुप्रतीक दि पा जना की दिसा ज
ने गो पे सुंदर हैं प्रतीक संग जा को य द ग्रंथ उन मान सो न हीं आवे गो और वारि वाद आदि में ये जना होय गो
ग्रंथ में जा सो ग्रंथ ये न ना विचार द मारे व ना प म्ने घ क नित रो स न जो व त के उप जै द रि वा त ज द्वा गु न घा नि
निहारी लो प न लो नै लगे ग्रंथ ने द सो प रि सर न हीं रुचि करी ना दि र थै दि त स म नि सो र स व रु त दै ध न
के कर चारी ने कु ल दी प क दै क विते कु ल दी य क की य द री ति सु धारी १० रो स को प ने हीं उप जै है और रो
सन प्रका स उप जै है वा त व च न आ वा त व ती गु न ग्रंथ ज आ दि गु न उ गु नी ति गु नी लो य न ने त्र ग्रो दी प सि षा
सो ले ग्रंथ क वि सो ग्रंथ र न हीं व ने ने द्वा ति ग्रो ने द ते ल सर जो धा ग्रो सूर ग्रंथ ना को न हीं प्र का स का
रो स म रु प न सुंदर म नि के आ गे हीं ग्रंथ न हीं व रै य द क द त है र म ग्रंथ र आ दि और स ज ल ध न हीं ल नि ग्रो
ध न हीं जो ग्रो सो प र ते जो कु ल दी प क दै क विते ति न की ज ग मे य द री ति वि चारी तो दी य क उप मा सो आ व
तो त व उ त्त म हो तो दी प क स ह्दी क हो ता सो म य म भ यो फे रि स वै या को क विला स व रा व ति है न रु ने
सु घ ग्रंथ र नी ल व ना वै भा ग व री न ल दै ज त नो सु ज द न वि रा ज त से न ज ना वै मि त्र सो ना दि मि ली अ व लो पु नि
प वि न को द रि गो द प वा वै सी कर नी की लगे य द जो मि नि ना दि स धी न व का मि नी आ वे २६ को क सो स
ग्रो को क च क वा ता के विला स को व रा वै द्वा कर दै य द ग्रंथ न रु न पु रु ष ग्रो त रु न वृ ष्ट न को अ व र व स

अनुमान करके

न

प्रथम दोहा में जना है
लेजा नि प्रयुक्त

पूर्व दिशा
से २२१ तीक

कहे

कंस.
३५

श्रीशंवर आकास भाग भाग ता की चरी न सौ श्री भाग प्रात ता दि वरी में द जार जन न करे तो न हो मिले ज हो
न में विराजति है श्री ज हो वि श्री सो पक्षी को ना म दे सो न ही राज न है से न सु मार श्री से न सो व नों मित्र दि न
श्री मित्र स ये पत्री पाती श्री पत्री पक्षी सी कर सी तार श्री सी कर श्री सर हो प्राता य हु ति १५ शंवर र द त पा
क सासन के व स सदा काया न ल पाति श्री सुर निरा ची दे धी दे भू धित फिर ति हरि चंद न कु सु म गात
देवर कर त रा जो दो प गति ले धी दे सो द ति क न क न ग ग ज ति सर ग्राम ल मे अल का बलि वी ना सो रु चि पे
धी दे ज ल पित स द न पि य ष जा को जा नि य त अ क रा दे न ही आली न रो आ व रे धी दे १० शंवर जो व स्र सो ।
जा को पा क पति र द न है सासन सी ष किं वा सा सता के व स मे स द र द ति है अ म रा पा ष शंवर आका स
त हो र द ति है पा क सासन इ द ता के स दा व स मे श्री जा की काया को ति दे धि वे मे न ही आव ति है श्री सी ल जी
ली है व स्र सो ट की चल ति है श्री दे व ता की काया प रु का या न ही सुर नि षा द आ दि श्री सुर दे व ता दि
क वि चंद न सो कु सु म सो गात भू धित कि पे फिर ति है श्री हरि चंद न क ल्य ष क को भे द है ता के कु सु म सो
गात भू धित कि पे फिर ति है दे व र को रा जो रा घ ति है श्री व र वां कित ता को दे कै रा जी कर ति है ही दा थो ।
की सी ग ति श्री हो पति मे जा की गति क न क सो ना ज वा दि र सो सो द ति है श्री क न क न ग मु मे रु त हो सो द
ति है श्री स सुर के ग्राम मे ग ज ति है श्री ग रा इ वे मे सात स्वर श्री तो नि ग्राम मे सर स दित ग्राम सो राज ति है श्री
ल क की आव ती पे कि जा को ल मे है श्री वी ना प्र वी न जो है ता सो जा की रु चि है अ म रा अ ल का कु वेर
की पुरी बलि सं वो ध न वी ना सो जा की रु चि दे धी है जा को स द ज को ज ल पित बो लि वो पि य ष अ म त सो
जो नि य र त है अ म रा स मु द सो नि करी है ज ल जा को पि ता है स र ज भाई जा को पि य ष है ११ राति ग द रा

प्राय दे जा १५
ल ज न र सी जा
वि प द ११३

स

नरि के सी है

प

श्री नग

रात

रु-कवि कहत है कि हाथे दो ओर से लजत है निरुको

ग

नसुषकरतनिदोरोदरिचाहतरसनमुषवाला नामरतदै राघतविभूतिफेरिसुक्ताफलहारचदैभावत
भवनमालग्रहदिधरतदै आसनग्रनेकगदैकेसरितचासोसोदैकामनीकेवसमोदरजतिभरतदैके
योभोगणपैकोरीभोगीदैजतमोदिकैयोभोगसाधिकोईजोगीगीविचरतदै ३२ भोगीरातिसुषसो
गुदशनकरतदैजोगीरातिमंगुदशनिकोंसीकरिगधेदैतासोसुषनिद्राकौकरतदैसुषसोखेमें
भोकदतदैभोगीरसनिकोंचाहतदैमुषसोवालानवीनसीकेनामसोरतदैजोगीरसेकौषदुरसता
कौनहोचाहतदैवालीजीवालीजीकदतदैवालालसनजीकोनामदैभोगीविभूतिसंपतिकोंगंधतदै
फेरिसुकताफलसोतीनाकेहारचाहतदैजोगीगीविभूतिराघतुकताकदिवडनफलकोआहार
चाहतदैभोगीभवनवराजाकौभावतदैजोगीभवसेसारनहींभावतदैभोगीग्रकोमालसंपत्रिकौरा
षतदैजोगीग्रकोमालाकौधरतदैभोगीग्रनेकतरदकीजैदैआसामेवइहांनकारेवडवाचकताकौरा
दतदैजोगीग्रनेकगदरासनआदि कौगदतदैकिंवाभोगीचिलासकेग्रनेकआसनकौगदतदैजोगी
ग्रनेककीआसनिकोंनहींराघतिदैभोगीजाकीतचासोलागीकेसरिसोदतिदैजोगीकेसरीनादरता
कीतचासोसोदतदैभोगीकेमिनीसीताकेवसदैजोगीनीकीतरदैजाकेवसमेंकामदैभोगीरजनि
रातिमेंमोदग्रानंदसोभरतदैजोगीरजनिसोभूरिनसोसवैयाघालकरो० मति० लाल० सो० आज०
अलीअरी० रातिनैअसंगेवदैसोतिमरो० अति० साल० सो० लाज० वितीवरी० दैवडोसुषदैदै
मोदभरो० राति० जाल० सो० राज० तेरोभलो० औरिदिपंडुषपैदैप्रेमथरो० निति० चालसो० फाज०
अटाचलो० केतिकचोजवरदैदै ३३ घालकरोसोतिमरोमोदभरोप्रेमथरो० चारिअकरकेछंदप्रति

जोगीकोतोहै

लालसोवालदीनको
सुभावनहीकरनासोअ
तिक्रमिकाठमनकर
रातकोहोसोगावेगी
लालसोआलाजहोसो
तनकोपरकामलप
रजनकोकिंवाको
अवलजहोसोतिमरो
मिलतलजकीकीतजा
पजीकेसुखहोयगे
ताकोदखतहोतवेजा
लमेवइहांनकारेवड
किंवाप्रीतिकेसदहसो
सुखजाना
सोमयाप्रेष
लाललोहोसो
काउधदैहोमंद
लगाजगामनको
तजोतमपासचलेकि
ताउधचलोउधतजे
नवहोगी ४

जात्रेकरकेभरतदै॥
भोगसुषनकोपावरो
कोभोगीतिचरतहै॥
किंवाभोगकोसाधके
काईजोगीफिरतहै॥

[illegible]

कल
४०
४०

हाके भेद प्याल करो मति सोति मरो अति मोद भरो रति प्रेम धरो नि निर प्याल करो मतिलाल ३ असे जा
नि एके रि प्याल करो मतिलाल सो ४ फेरि प्याल करो मतिलाल सो आज ५ चारो तक मै असे पट्टि प
फेरि प्याल करो मतिलाल सो आज अली अरी ६ असे राति ते असे गवै दै दै वडो सुष दै दै अरि दै प
उष पदै के तिक चोजव दै ७ अली अरी विती चरी तेरो भलो अरा चलो ८ प्याल करो अली अरी भा
ति मरो विती चरी मोद भरो तेरो भलो प्रेम धरो अरा चलो ९ दोहा प्याल करो मतिलाल सो सोति मरो
अति माल मोद भरो रति जाल सो प्रेम धरो नि नि चाल १० सोरवा प्याल करो मतिलाल सोति मरो अति
माल सो मोद भरो रति जाल प्रेम धरो नि नि चाल सो ११ नीतिकी चाल सो या कौ का मधे नु को भेद क दन
दै र पार द छे दन करन है माला को रस को लषे जाला दरत सरोर वाला एरस कौ चसै पाला करत स चोर
१४ गो मृत्रिको १ अ अ गति र चरन गु म र क पाद वेध मै चलत है मान दा न गुन जा न मन न आन दा न गान

गाम्जु
क.चिन्

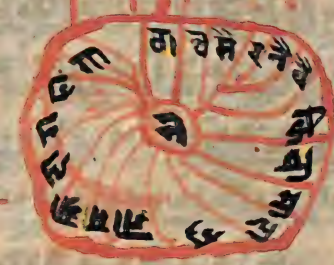
मा	ला	को	र	स	को	ल	षे	जा	ला	फ	र	त	स	मी	र
वा	ला	ए	र	स	को	व	षे	पा	ला	क	र	त	स	ची	र

मा	ला	को	र	स	कों	ल	छे
या	ला	ह	र	न	स	शे	र
वा	ला	प	र	स	कों	च	छे
पा	ला	क	र	न	स	ची	र

चरणगुप्तचित्रदो

क.पा.
हवध

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीमद्भगवद्गीता ॥



३	५	७
८	६	४
९	२	१

जा	को	स	ल	ज्वा	ह	त	री
ला	र	कौ	खै	ला	र	स	र
का	प	स	च	पा	क	त	च

किं॥ नायकस्य प्रथमकृतं॥ नायिकाकाव्यं यदुत्तमं
मानसीयान्मुनेः प्रोक्तं तत्तुल्यं प्रमाणं काव्यं न कुरुते
गनरस्य प्रोक्तं हीनं प्रथमकृतं॥ ५

५ धिक्करोतः॥ ५ सास्येतकीरः॥ ५ वीक्षितको
५ विवोरोतः॥ ५ स्यात्करोतीकृतमानप्रजा
किंतु नवकरोतः ५ हतः॥ तेन नवमीं नोतास

२ पाहिनि। निरुत्तरवर्ग

॥ ३ ॥ उपदेसकर जे हे उर
त श्रीतकी दीजे पोतेजा
जे हे सोजात हे दुखात
॥ ओ जत जातुन सत
त प्रसिद्धागत जो प्रते
॥ ३ ॥

सप्रितकीयतेतेते
 गजतीयप्रो॥ प्रप्रित
 गपाद्यो हे प्रितकदे
 वितसनेहलो नका
 प्रोकहोतसवेनात
 यतते॥ वित ह्यवे
 नीयवनकरवेषन
 वेस्वनातसेपतवत
 नतसंपीयवस

पाकिहजो ॥ हो स
नायकाकेसमेचाय
कैनेननकोमचावत
जोनीकोप्रकापन
कोवसकतहै। कि
तापिचाहै। तातनाय
तावकतहै ॥ सो
अपनायकप

लीशविलास कतजहारनिदेखिये औ सो गुण
सुभास ॥ ३ ॥

हरसा सो नै न निरंतर है केवल सोचा
इतने ॥ २ ॥ पिछित के वयाति होखर
सो कि वाचल सो हर कवि रचित हो

५२

तो परवारी श्रुती ५६ करसौ दोऊ पावनिको परसौ नरसौ परदेस गयो वरसौ सरसौ दिये वधत कामस
घोचै नैन निरंतर हो वरसौ सिरनायक रौ विलती जन प्रानर है तिहर वरसौ तरसौ हरि वासुपदेषन को
चित चाहत जाय मिलो वरसौ ५७ अथ पोरसी श्रवण भाषा को चित्र क जानि कुजा श्रवण नै वगो जन जे
वरचारु जसुरंद केतन हूँ ५८ गनर वहर मेता वद श्रै सो नदी महता वग है मन मोय कलोरुष सार पै राज
न को दक गार से न माद है सन श्राव पै गौ हर की कल कै लखि सो हर की नल गै पल को लून ५९ कोई लु
गाई को वचन नायक को जाय दै कुजा कहां श्रवण नै वरसौ वगो को श्रय क हो जन पल गाई ते रत न मै जे व
र गह नो चारु सुंदर जसुरंद पत्रा के है रूप गमुष को नूर रूप वहर हर सो मे तावद चमकै है महता वचै
मा श्रै सो मन को नदी पकरै है जे सो मुख मन को गह है सो पके सकला वरे रूप सार गाल पर सो भत है सो नो
को दक बाल कमार सो पके है गप्पो न्ये छामे जु माद है लै है सन भल है गौ हर मोती की कल क सो हर पति श्र
य से सून पार सी व्रत भाषा को चित्र क गच्छ सिक्कर द तो जन प ५९ श्रि सि किं रसिके वद गस्त निहारो तिष्ठ
सि किं न वने सून श्रा म द वागे सो संगी वदो गता म द म च गिर फल म घे द घाव ई जार स वात उ चारो गजति
तेल पने श्रज गौ हर श्रवत रथों नलिनै रघ वागे ५६ कोई पुरुष की उक्ति सौ रीनी सो गच्छ सि जाय दै क
कहां गरहतः वरसौ जन पार सो लुगाई को नास है जन प श्रि सि दे घे है कि क्या कान को ई रसिक पुरुष को
दे घे है वद को श्रय क हो गस्त सो च निहारो किं क्यो नदी वन विषे तिष्ठि सिको श्रय र दे है स व गति श्रा म द श्रा
ई फेर वागे वर घा भी श्रा रं तो नु म को श्रदं द म अ च श्रा न गिर फल प करी घे द ह सो ई जाइ हो वु धा व स य न क
रो ते कां दिये नु मा रेल पने मुख रजति सो भ है श्रज गौ हर मोती सैन श के मो तो सो जानि प यो कियो अषत

श्रीमद

उ

क
ध

करी

ला

य

इहां तक

देव

ते

आ

योहि

ल

धर

रतागनलिनैं कमलताकोरछकदैँ अथतुरकी पारसी ब्रजभाषा को चित्रक दोहा सा चरु आगिजै गगौर
मचकवारसुधवकनवगजसकेलतोमेवीनममरगव ५० कोइनायका की तारीफ करै दे साचसिरकेनेम
आगिजसुध गगालमचककुचवारको अर्थ पूवदैँ कजगोधि वगजगलाकेलवोहतोनेरेमवीनममें
देघताहो मरगवमनोहरदैँ पूवतोमेवीनममरगववारपारसी गोरतुरकी हमारे कियोतुरकी प्रका
सप्रसिद्धदैँ हमारे कविचातुरीतामें पारसी देखिलेइगे रूपगविताकी उक्ति जो कोई स्वप्रकोफलअफ
लविचारैनामो पारसीतुरकी कोचित्रक दोहासा अथ वरपुरममनुरामदीदमदरघावविजनीवीनाकाप
सीमसिकवगुलाव ५१ सोमोअ वरजोसप्राधायपद्योहोयतासो रूपगवितानायका की उक्ति देमोअ
वरतुरगतोको पुरुसमएकै दोमदीदममें देघोदरस वसपानांमें विजनीमो ५२ कोयदतुरकी हैवी
नादेघतकै का सी कौन पुरुस है यदतुरकी है पुरुषअथाहारमोजो नि एवगुलावगुलावको मेसी
कलतैरेया तेरेअंगकी सो सुकुमारताओ पुसवोयगुलावमें नही निकसोदैँ अथपारसी देसभाषा
तुरकी कोचित्रक कोई पुरुष एकांत में सीको देखिकै कहतैँ सवैया पूवतुरा मनदीदम ५३ कामिनि
कापसीवारबुबोनेरसीदमआमदकुकदासादबुल्लतवरायतोओ गुलहाय रुचीदमतोई कारीउजो
मनदस्तमअजैओ किलोसिनफैल्योअरीतमपावधजोदओघोनेइराकतोचीनमेमोयममाकमिप्रोतम
५४ पूवअछातुरगतोको मनमें दीदम देघादे कामिनि कापसी कौनवारको अर्थ है कौन है तें यदतुर
की बुबोनेरसीदमपदआमैअमदआयो कुकदाआकासमें यदतुरकी स्यादस्यामबुल्लतवादरकोनाम
तुरकी है वरायतौरेलिऐओभाषा है गुलहाय ० वदतफलरूभाषाचीदम ० बुन्यामें नैतोई कारीतेरेआ

गोंउजोग्राप० मन० मेहस महेतेरेगोंग्रापुमेंहोंइकागेउजी० मनतरकीअनेकिलसिनअरजकरता
 होंकिलसिनतरकीफैलाअरीतमदेसभाषापायचेदमातरकीषजीदछपौषानेचरइराकहरतरकीदे
 चीमसोचतरकीतेरोहेमेगोयमकदताहोंमेमोदिमीतमकरोअअत्रनभाषाओगोउदेसकीभाषाको
 चित्रकमंदमुसुआविमनदरनसदजवानिभूलेंहूनभलोभट्टतेपावधारिओइहेजियज्ञानिचितरवि
 कुलकांविअरीदधिहोंनिसौसनेहउपधारिवोमानिले० न० उअरा० अमादेर० एमुनहोइलोदसातार
 कहितेंनारिवोकतवारवौलीसविदेविआगोंविंदमुपतुमीअरवारवारीथाकितेनपारिवो ५३ हेराथ
 उअरावेसवेजेमधीहेंतअमादेरदमसबकेवचननहीं० मानिले० नहीमाने० एमुनअसोहोइलोभइंद
 सातारताकीकहितेनारिवोकहितहींसकैकतवारवौलीसविदेसषीकेतनीबेरनोहिकहीदेविकें
 गोविंदकेमुपकोतुमीतुमआरवारओरिवेरजवनदेखेगीतववाजीछरनहोथाकितेनपारिवोथाकिते
 रहिवेनपारिवोनहींसकैगीअथमारवाजीभाषाओदेसभाषाकेचित्रकअलगैनभवणापिसागुरु
 जगमागोकमलगडलकलकलननिदारेकैतापडोउसासकीथाकामागोविसवासमेरुयोरीस
 रतिजप्यहीकीवितारेकैबूढेबलिऊबेकालीकांबलिसोरूबैएममिलोजेठेपालिनतलवरीविसारे
 कैंकाइजागोंकेमपागलीथोरुपवीधादियाथानेहीठगपकागजलाजनसंभावेकै ५४ नायिकाना
 यककोदेपिआमकभईदेताकीदसासषीनायकसोकदतिदेवाकोभवनचरनहींआलगैनहीमोहा
 तदेगुरुजनकांपिसागसजुजानतिदेउहीपनहैतासोकमलओगडलकुसुदनीताकोनहींनिदारेह
 तापडोउसासतापडोजलदनिस्सासेलतिदे कीथाकियोंकोमनरोजादकोविस्वाममनमेंदेमारुमा

तो

मान

न

सा

रुकीनप्रकाश
 तदेनेउ
 कउवेमकनेवी
 देहामलकमिमी
 उत्तमप्रकृतिय
 प्रवदोउतापलो
 नसीविजकापुल
 कीनमेपानथ
 कउमसोनहउ
 कोरनेकरना
 श्रीकृष्णसोमेमकी
 पोतेरमुनक्या
 सीपयलिकही
 भईदेसावस्था
 रमातकीजोकरते
 ननारिवोकाकहते
 सीधकाइजेसीव
 साभइरे
 कीदि

क
५३

43

रवाउकेपुरुषग्रामारुसंदरकोभीनामहैथोकीतुमारीसरतिजहोहीकीजवतैदेघोतवहीतैविचारैहैया
दिकरैहैवैवरसाभपेसोवमिउवैहैकालीजोकोवलिउवतीबुरातामोरुहैतैदिनहीदेपैदेरमयातउद
मिलीजवैजाहिगेरतलावगीतलावकीपालितदताकोनहीविसारैहैकोईजागोकहाजानोंकेमकैसी
तमहैकोपणप्रतिज्ञासीथोलिओहैरूपवीधादियातुमोररूपसोवाकोहियामनकैदिरह्योहैथाने
दीव्योयकोतमदिदेपैसोहैराजलाजकोनहीसेभारैहैउन्नतदसोहैयहअर्थतममिलोवासीभाषाभ
षनमेलषामसार्थालंकारउहोकेहैसबरोपमेंमसदकेअनुसार ५५ नएकहूंप्राचीनमेंदोहाथेरनिआ
यकरुजुसभाप्रकासमेंसोमेदेतजताय ५६ अश्वसभाप्रकासकीसचीनायिकाकीजातिजानोपद्वि
नीसुआदिकामेसीयाआदिनीनिमुखाआदिनीनिगनिपज्ञातअज्ञातनबोहाविअध्वनबोहाप्रदमु
ग्याभेदमयाओप्रगज्ञाहूकोभनिपयीरआदिनीनियोहूजेष्टारुकनिष्टाभेदअश्वपरकीयासोपरो
हूकन्याभनिपगुप्राहविदयापुनिहलकिताहूकुलराहैमुदितानुसयानापरकीयामेवनिप ५७ क
हैसामान्यअसमंभोगउषिताहूजानोवकउक्तिगविताहैमानवतीनरीहैमानभेददसनिसमेतआवें
नारिकहीउत्तमादिभेदसबसपीहूउचरीहै~~यहसबसपीहूउचरीहै~~नायककोभेदअरुसपाअनुग
कहैदरसनभावहवहैलाहूकोथरीहैवरनविभावनुभावथाईसातिकहूसेचरीतैतिमतिकीरीतिभ
लैकरीहै ५८ भाषाभावसेपिओसवलताहूसातिभाषीरसेदरमित्रशत्रुसमूहउचारैहैअंगअंगीभा
वनिसाछातप्रेमलकनहूसमसेहभावधनिनिरथारैहैरसाभासभावभासरसदोषादोषहैअध्या
हारउपलकनजातिवक्तिथारैहैओमिहंसअन्वयओरीतिओरीतिओसमासपुनिअभियाओजोति

कादिसहदिसुधारहै ५४ द्रव्यगुणक्रियासहजातिचिह्निलक्षणाहेरुहाश्रौप्रदेजनकेभेदनिदिषाएहै
 उपादानलक्षणाहैसारेणसाधवसानासहागौनीजदतग्रजदत्तायावाएहैगुरुश्रौश्रुगुरुयंगपफ
 लधर्मधर्मोगतबोजनाससाहीहूकैभेदहैसुहाएहैसहसोजहोतहैसेजोगआदिभेदपायलक्षणाहू
 मूलभलीभोतिमोवताएहै ६० श्रारपीरचीहैवकाआदिकीविसिष्टतातैवतितान्यज्ञाश्रौरिआकेपा
 हूकौमानीहैउतमकायहूलक्षनामूलधनिमोतौग्रविवक्षितविवक्षितवाचकविनिवधानीहैग्रमे
 ततिरसूतग्रधीतरसंकुमितहैग्रभिधाहैमूलजाकोकहेमैपिकानीहैविवक्षितान्यपरवाच्यसंल
 द्यग्रसेलस्यग्रसेलस्यरसभावधनिमैतोभानीहै ६१ संलस्यभेदसहग्रयवस्तुलेकृतिकारिस्तः
 संभवीसोप्रोवोक्तिमोदरसायोहैदसदजारचारिमोपचावन १०५ ५९ धनिभेदमध्यमकेउतोगाग्रा
 दिश्रावगायोहैसहचित्रवाच्यचित्रग्रयमकेभेदकहेगुनरीतिश्रौरिहूसभेदमैवतायोहैएनीवातकंव
 कैजेरोपतकवीसरदेताहीकोसरहैदेसनिमैछायोहै ६२ श्रुगारकवितलायनकमलश्रोलुना
 ईजलमंजुलमैमंडुटिवाकरकोविवदरसायोहैप्यारीदेहदेसमैसरोवरसलोनीमुषश्रौसोजगजोहै
 कहंदहसरोनपायोहैमोभासुनिभूपतिग्रुनगरंगसोदिषापोसाजिवेकोरसहाससेवकपवायोहैरोम
 राजिमिसितैरसीलीसामरेसमकीरसीलिपंजोवनजरोवकसंश्रायोहै ६३ कादिवर्तनहोदिजहोरसना
 मधुरध्वनिमोहतिहैमतिमोहनलालकीनोदीकहैकविफुवोपरैउपमाकेनलायकतेतुमनाल
 कोनिग्रयमध्यकोमानतहैधितिहोरिकैनीवीउरोजविसालकीहैग्रहचाललषायपरैनदिनोनल
 पायपरैकादिवालकी ६४ सविदेवतहीवृषभाउसुतादिहिपंदरिपीतिलताउलहैसवश्रोगग्रनेएहै

देवपीसुतेवरे
 देवपीदेसमेमरा
 सपानसुखदे"तमे
 नेजमोईकोसुख
 लनाईहैउताहैउज
 लताजलहैताप्रेतउ
 देविउमोईसुखवि
 सुरुपदे"जोईदेष्ट
 है"कामेवपीउजउ
 देसकीमोभकेहून
 केरंगप्रेषणहै"तिर
 देसतेसवारहनता
 प्रपमहास्यसंस्त
 भज्योहै"तापाय
 मराजीकोवहाना
 कीयोहै"सुप्रदे
 येसमकीलीरजोव
 नरूपजितीवका
 भममापनताहै"जो
 पाहै"॥११॥

जस
 र
 मापनेवाहो
 यमपउउकाकोकते
 करिनहीकोकविउपर
 नहै"उपमवितापेवमु
 नालवितोहै"जो
 नीवीलेकीदिनालेवी
 जोउपायचनकीस्थ
 देवने"पुनकोनिग्रयनतहै
 विकरहैबहुजेनसिमावतेहै"जेहेगहो
 कीचालदिभारनहै"जोचलतहै
 निमाहिनहैदितजेहै" ॥ ३॥ ३॥ ३॥

यद्यपि को देव के शक्ति की ताउलहे उभन उभन है। भक्त जगत् में हाव भाव रहे।
 सोई को प्रकृतान है। प्रतिष्ठा निष्ठा। प्रकृतान है। अर्चन जगत् में ही प्रभाव है। विनये।
 मन की गत हो। प्रकृतान ही वापस वत रहता है। सो देव। जीमन्त ५३३ अष्टका

न होत लक्ष्मी है त हो गंगा जी समेत समती रूप है। जाह नि। तरे। की सायना। ओ उमा। रेडे
 जो दजी के धन ही लसी। ललसी विजेन्द्र दय्ये गे। तिनको शंभु कहन है। जो पावन पवित्र नर है।
 नरे पांच वर। तिनमें ही भक्ति। जो भक्तों के जाते है। वितायन को करत है।
 लक्ष्मी निज प्रापने लिखे पर ॥ ४

कल
 धध

मानो निषेग न हो मध की छवि चंदन है भक्त की नगवेंक अष्ट पदे लंक अली हून जानति है कि न दे मर की
 गति नो दि लै सजनी करि दे करि की रसना दिक है ५५ दोहा जो चा हो भव भय मिटे भक्तो महा गोविंद हरि
 उज्जर न तल सिंदल षाड्क रो आनंद ५६ भव जल पार करत लसिय हनु वस हज सुभाव दे पौ नग में न
 दतर वै ठिकार की नाव ५७ सबै पावा सज हो सब नीर थको औ भगीर थको सरिता हव सी है मवति ना
 हिर मा औ उमा जिन की समता कौ न हू जी लसी है सो सब अंग मनो हर चाह त पावन भक्ति रसी है हेतु है
 लवि जात त होर है कारन तारन को तुलसी है ५८ अथ श्री गंगा जी की मूर्ति कवि न जै मनी रवि दुअर विंद
 पराजत है कृष्ण पद पै कज मे अमै गंगा थार है पाप पुन ना मे सो विना मे है अघिल घेद सुमति प्रका मे मे
 भुसिर को सिंगार है मेरे हरि लोक हू को रो कवी त सो कर चहु दे कर्म जा को कि ऐना मुको उचार है जम को
 मस दी करे का गद को र ही निज लेष पर फेरे परि वेष करतार है ५९ जो दिग धै सी सज ग दी सजा दि भाष
 त है नि नि पाई हरि मो च अरु काम सो छु मा की हो पानि दे पी दी न पे दया की बानि सुनो देव धान तु व वेद
 तिके। ग्राम सो माय लोक माय की पुजा येति हू लोक ही हूत ही मिला यत जो देति नृ नृणा म सो पर उ पता
 पी हो द जा पी म दिग पी अ सै तरि जात पा पी सुर वा पी तेरे नाम सो ६० नाम लिपे भव पाप न मे र चि जाति सो
 ज्योत म न तो मन सो हीरे त की ज्यो कनिका परै प्रत पै तौ विधि लोक के ऊपर जा ही दीन की और दया निधि।
 या विन लो मे रो भलि हों नो ही देव तरंगि नि अंग नि मो नि जडा मि हों ते रातरंग नि सो ही ६१ दोहा अति द
 या ल हरि हिय वसति में तु अ भक्ति वि ही नर मा करे अ पराध सो कृ मा जानि कै दीन ६२ अथ कवि की
 स्थिति न वा पाँर सभ दे स में रा जत च दया ग्राम श्री विष्णु भावे स में वा सु देव त पद म ६३ ता को सुत श्री रा

का की नाव में देवे न
 को नृ नृ तरे पाप
 दे पौ न सो न रा
 प्रभाव है ॥ ३

पावन

प्रसन्नता

जीत

के मातर मा को समु
 रो की कृताने मा समुद्र
 की पाते लक्ष्मी की पाता

जोगा

कैद

कैद २०४

दोही नाम

क. स.
४५

थनकियोचैनपुरवासपरगजागेआतहोचारिवर्नसज्जलास ७४ सालग्रामोसरजुकीमिलीगेगसोधा
विश्वेतगलमेंदेसतहंहैसारनिसरकार ७५ तनैरामथनसरिकोहरिकविकियमहवासववचसुभ
ग्रंथदिरचौकवितादोषप्रकास ७६ उहादरनप्रचीनदेकीनैकहूनवीनचोग्रंथकोसुगमकरिलिपि
हैसकविप्रवीन ७७ एगोहितश्रीनेदकोमुनिसोडिल्यमदानहमहैंतिनकेगोतमेंमोहनमोजजमान
७८ इंद्रादिककोंहेतजोसेपतिमोजतमानतहिनजिजाचौओरिसुरनहिमोसोअज्ञान ७९ राधिकाके
हगसोसजनीसमतानहोयेकजकेदलकीहैघजनमेजुलभासतहैनअनवीचनीकुविकजलकीहै
छदिपरीअलकेपलकेछरुउअउराजनिमेजलकीहैकेवनकेमनुचारुपहारमेंधारधसोजसु
नाजलकीहै ८० संवतनैदइतासनइदिगज ८१ सोंगननाजुदिघाईहसरोजेवलसीदस
मीतिधिप्रोतहीसावरोपकनिकाईतीरतडागकेओबुधवारविकर्मनिकीगति लायलगाईश्रीनल
सीउपकेवतहोरचनायहपूरीभई ८२ श्रीराधापदकेजकीरजनिजनैतनिलायचकादतकियम
त्युतवकुलहिकेवलगाय ८३ इतिहरिचरणदासकृतेबृहत्कविवल्लभोग्रंथः संपूर्णसमाप्तम्

सवैया

कथदाई

कु
लि

१६०० ए पञ्च

प्रथम लेखार चमत्कार को जनक जो प्रादुर्भूत है होय ॥ कंगारसा ॥ दिक्ताय न हे मंतं की मो
उपमालघन ॥ उपमानर उपमय में सम हो भाद साध ॥ ता हो उपमा कहत है लकल ॥ एक विस्मय
उपमालघन ॥ जाकी उपमा दीजरे सा कहती ॥ उपमान ॥ जो को उपमा दी ए सो उपमै लिखात ॥
भी रहे हो सम ॥ यदि है उपमा वाचवजा ॥ ॥ एक धर्म है न मे सोई धर्म प्रिय ॥ न ॥

[illegible]

मेनातवरा
पुष्पां दी
पुष्पां दी
पुष्पां दी

(1) सुत्तमसिन्धुवर्षः
सा २५९८ आ।
प्रा. १७ में वर्षा ४
वर्षकायु मङ्गल-
की जायती दवा
मा ग न - ने

३। =
सुत्तमोटा
खर २ को
बना २२ फ
दना १७



672